National Meeting

On

Forum to Engage Men (FEM)

Venue : Room No-308, ISI, Lodhi Road, New Delhi

16 June 2012

अजेण्डा :

1. स्वागत, अजेण्डा निर्धारण, सभापति का चुनाव
2. रिव्यू :
   - पिछले मीटिंग के मीनट्स
   - FEM का महत्व
   - पिछला कार्य और ढांचा
   - बाकी नेटवर्क के साथ जुड़ाव
   - स्थानीय अनुभव
3. आगे की दिशा और प्लान
   - रणनीति और गतिविधियाँ
   - Global Campaign on VAW में भाग लेना
   - क्षेत्रीय रणनीतियां मजबूत करना
   - फंडिग जुटाने के तरीके

सतीश कुमार सिंह ने सभी उपस्थित लोगों का स्वागत किया और आपस में सबका परिचय हुआ। आज की मीटिंग के पहले सत्र के अध्यक्ष के रूप में श्री मोहन हिराबाई हीरालाल का नाम सर्वसम्मति से सुझाया गया और उनका स्वागत किया गया।

सतीश सिंह ने फिर अजेंडा के तहत एक अपडेट दिया। कुछ लोग इस मीटिंग में नहीं आ पाए क्यूंकि उन्हे पहले से ही कुछ और काम था। कूछ मित्रों को ट्रवेल सपोर्ट चाहिए था, और हमने इसके लिए कोशिश भी करी थी। कुछ मित्रों को हमें मना भी करना पड़ा क्यूंकि सारी ट्रावेल सपोर्ट की ज़िम्मेदारी हम अकेले नहीं ले पायेंगे।

इस मीटिंग में उपस्थित नए मित्रों की सुविधा के लिए FEM क्या है इस विषय में संक्षेप में आनंद पवार ने बताया। FEM पुरुषों के साथ काम करने वाली भारत की एक प्रक्रिया है जिसमें महिला आन्दोलन से जुडे हुए पुरुष शामिल हैं. ऐसे पुरुष जिन्हे ज़रुरत महसूस होती है इस मुद्धे पर पुरुषों के साथ काम करने की। 1991 -1992 में मुंबई में मावा शुरू हुई थी। इसके पहले महाराष्ट्र में कुछ और काम भी हुआ था। पुरुश्वाच्य नाम से 1984 में हुआ था और 1994 में ICPD में पुरुषों की भागीदारी की बात हुई थी. इससे एक माहौल बना था पुरुषों के साथ काम करने का। 2002 में MASVAW का गठन हुआ।

यह सारी प्रकिया एक तरह से लोगों को जोड़ रही थी। 2006 में Population Council की एक मीटिंग थी जहाँ कई लोग इक्कठा हुए और फिर से इस मुद्दे पर इकत्रित होने की बात हुई। 2007 जनवरी में Men Engage नेपाल में एक consultation हुआ जहाँ भारत से भी कई लोग गए हुए थे. Men Engage एक alliance है जहाँ पुरुषो के साथ काम करने वाली कई संस्थाएं और लोग शामिल है, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर। South Asia Consultation जनवरी 2007 में काठमांडू में हुआ था। भारत से आठ लोग गए थे। तीसरे दिन जब अंत में consultation के action plan पर बात हो रही थी तो समझ आया की पूरे भारत का representation नहीं हो रहा था। तब यह निर्णय लिया की अलग मुद्दों पर काम करने वाले, अलग प्रक्रिया से जुडे लोगों को शामिल करना चाहिए। उस consultation में बिना कोई प्लान बनाये वे आठ लोग वापस आ गए। वे लोग फिर से मिले जुलाई 2007 और अगस्त 2007 में। चर्चा हुई की नाम क्या होगा, यह Forum to Engage Men नारीवादी आन्दोलन से कैसे जुड़ेगा,

सामाजिक न्याय आन्दोलन से कैसे जुड़ेगा, यह अपना विचारिक जुड़ाव कैसे दिखायेगा ? चर्चा से तय हुआ की यह एक open forum होगा। कुछ मूल तत्वों को मानने वाले लोग शामिल हों जो चर्चा करें, ज्ञान निर्माण हो- तब से यह इसी open forum की तरह ही है। 2007–2008 में फिर एक National Consultation हुआ पुणे में जहाँ पर मुद्दा आया की हम नारीवादी आन्दोलन, आदिवासी आन्दोलन, दलित आन्दोलन के साथ कहाँ हैं ? तब तक मर्दानगी पर और पुरुषों के साथ काम शुरू हो चूका था। यह सारी चर्चा चलती रही है। जब मौके मिले तब लोग मिलते रहे। एक मीटिंग नागपुर में, एक कोंकण में हुई। फरवरी 2011 में हम फिर दिल्ली में मिले, जो हमारी आखरी मुलाकात थी। Resource जुटाना थोडा मुश्किल रहा है जिस कारण FEM की मीटिंग किसी और प्रक्रिया के माध्यम से हुई है।
FEM ने अभी भी कोई विस्तार अगेंडा नहीं लिया है या कोई मालकियत की सोच न लिए हुए एक खुला मंच है जो चाहता है की पुरुषों के साथ पहल करे कुछ मूलभूत मूल्यों के आधार पर। कुछ लोग इस मंच को छोड़ कर निकल गए हैं, काफी लोग जुड़े हुए भी हैं। कुछ नए लोग जुडने की प्रक्रिया में हैं।

मोहन जी ने कहा की FEM का एक प्रारूप भी है जो चाहए सतीश सिंह से संपर्क कर के ले सकता है– FEM क्या है, इसकी विचारधारा और दृष्टिकोण क्या है, सब दिया हुआ है।

बिमला जी ने स्पष्ट किया की FEM का पूरा नाम Forum to Engage Men towards Gender Equality है।

मीटिंग को आगे बढ़ते हुए, सतीश सहि ने अपडेट दिया। 11 February 2010 को यहाँ पर एक बड़ी मीटिंग हुई थी। उसी समय ICPD के तहत पुरुषों की भागीदारी महिलाओं पे प्रजनन स्वस्थ्य को लेकर एक consultation हुआ था। उस समय दो – तीन महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई थी जैसे फेम क्या है, फेम हमें क्यों चाहिए, हम इसमें के योगदान देंगे– इन सबको लेकर चर्च हुई. FEM learning और sharing के लिए बहुत ज़रूरी है. उस समय यह भी बात हुई थी की FEM में हम व्यक्तिगत रूप से क्या यौग्दान करेंगे और FEM हमें क्या देगा। यह भी बात हुई थी की FEM सिर्फ मीटिंग तक ही सीमित रह जाता है कुछ निर्णय नहीं लेता। अपनी पहचान बनाने की भी बात हुई थी। भारत के अलग हिस्सों में दिख रही अलग मर्दानगी पर भी कुछ दस्तावेजीकरण की बात हुई थी.

अगली Follow–up मीटिंग तय हुई बंगाल में। FEM ने इसे आयोजित करने का निर्णय लिया जहाँ मीटिंग के एक ट्रेनिंग भी रखी गयी। ट्रेनिंग के खर्चे की ज़िम्मेदारी हमने ली पर आने जाने का खर्चा हम नहीं उठा सकते थे। बहुत लोगों ने आने की इच्छा व्यक्त करी पर बहुत से लोग घटते भी रहे। अंत में यह ट्रेनिंग हुई पर FEM मीटिंग नहीं हुई। इससे एक टूटन का सन्देश गया। नवम्बर में एक Follow–up मीटिंग हुई जहाँ पर चर्चा हुई की क्या जुड़ाव की कमी है, या क्या हम आगे नहीं बढ़ना चाहते। उसके minutes हमने भेजे थे और यह तय हुआ की FEM की प्रक्रिया पर साझा विचार होना चाहिए, विस्तार से कार्य योजना बनानी चाहिए और पाठ्य सामग्री भी होनी चाहिए.

विचार किया जाने लगा के FEM के पूरे अस्तित्व को हम किस तरह से देखते हैं ? क्या FEM को एक NGO की तरह देखा जाये– यदि हां तो काम कैसे होगा, महिला संगठनों के साथ जुड़ाव कैसे रहेगा, आर्थिक मदद कैसे मिलगी ? इसके अलावा भी पावर और प्रीवलेज को महत्व देने की बात की गयी। Gender as a spectrum को लेकर भी कुछ बात–चीत की गयी जिसमें मर्दानगी, महिला संगठन, Donor, युवा, Academic और Media वगैरह की बात की गयी। मर्दानगी को लेकर राजनीतिक दिशा कौन देगा ? मर्दानगी और जेण्डर में जो नये विचार और शब्दावली निकल कर आ रही है उसके बारे में सोचना होगा।

अभिजीत जी ने कहा कि FEM के साथ काम करना रूका नही हैं कुछ लोग FEM में भी ज्यादा सक्रिय रहे हैं कुछ लोग SANAM प्रक्रिया से भी जुड़े रह है।

जीत ने बताया कि किस तरह SANAM के माध्यम से चार–पांच देशों जैसे भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका से लोग इकट्ठा हुए और उन्होंने masculinity को theoretically सीखना शुरू किया, यहां काम दो भागों में हुआ। पहले भाग में हमने Research की किस–किस चीज में हम masculinity देख सकते है जैसे Masculinity in Violence, Gender, History और Media इत्यादि। इस Research से जो भी पाठ्य–सामग्री मिली उसे Contextualize किया गया और काम शुरू किया गया।

लक्ष्मण ने संक्षेप में बताया कि हमने बहुत सारे विचार–विमर्श हुए FEM को लेकर जैसे कैसे FEM के मुद्दे को South Asia level पर रखा जाए, Networking process को मजबूत किया जाए और वही से Capacity Building को भी शुरू किया गया जैसे Knowledge development (क्या करना है कैसे करना है) इत्यादि। Masculinity को लेकर भी South Asia Level पर बहुत सारे विचार–विमर्श होते रहे है और जून 2009 से लेकर फरवरी 2010 में इस काम को लेकर एक दिशा दिखाई देने लगी। इस मुद्दे को लेकर Curriculum और Guidelines बनायी गयी जिसे लेकर उन्होंने SANAM Fellowship की जिसमें अलग–अलग क्षेत्र के लोग शामिल किये गए जैसे Student, NGO, Media और कुछ Researchers भी मौजूद थे।

मोहन जी ने बताया कि उन्होंने जब काठमांडू में South East Asia की मिटिंग अटेंड की, तो उन्होंने देखा कि पाकिस्तान और बांग्लादेश के लोग भारत को कैसे देखते है। इस बात को गंभीरता से सोचा गया कि भारत को अहिंसक और अधिक मानवीय बनाने की जरूरत है जिसके लिए FEM की शुरूआत की गयी ताकि बिना किसी डर के लोग हमसे जुड़ सके और अपनी बात खुलकर हमारे सामने रख सके क्योंकि हमे Masculinity के मुद्दे पर एक साथ मिलकर काम करने की जरूरत है। FEM की बुनियाद को मजबूत बनाने के लिए सभी लोगों का साथ बहुत जरूरी है।

सुभाष जी ने कहा कि अगर हमें पुरुषों के साथ काम करना है तो पहले हमें नारीवादी आन्दोलनों के साथ जुड़ना होगा।

सतीश जी ने कहा की जो South Asia Level पर हो रहा है उसे किस तरह भारत में बढ़ाया जाए, इस तरफ सोचने की सबसे ज्यादा जरूरत है। अभिजित जी ने कहा कि इस समस्या पर बात–चीत करने के लिए एक Vital Communication Platform होने की जरूरत है और इसका Commitment मीटिंग में आए सभी लोगों को करना होगा। डॉ संजय ने कहा कि मीटिंग में अलग–अलग संगठनों से लोग आए है। विभिन्न संस्थाओं और संगठनों के बीच किस प्रकार से सम्बन्ध है, लोग किस स्तर पर एक–दूसरे से कैसे बात करते है, इन सब बातों को ध्यान में रखकर हम एक दूसरे से अच्छे से Communicate कर पाएंगे।

सुनीता जी ने कहा कि वह मानती है कि FEM बहुत महत्वपूर्ण है पर, किसी भी समस्या को लेकर कोई भी महिलाओं के साथ नहीं खड़ा है। पुरुष संगठनों की प्रतिक्रिया महिलाओं के मुद्दों पर नहीं आती। सारी चीजें महिलाओं पर आ जाती है। तो पहले हमें अपने Foundation को ही मजबूत बनाना चाहिए। इस पर आनंद जी ने कहा कि हमें स्थानीय स्तर पर महिलाओं से जुड़ना चाहिए। समस्याओं का Political सम्बन्ध क्या है इसका पता लगाना चाहिए और इन मुद्दों पर तो राष्ट्रीय स्तर पर कैसे उठाए ये सोचना चाहिए। मोहन जी ने कहा कि FEM की शुरूआत में महिला आंदोलनों का भी बड़ा योगदान रहा है। हम सब को मिलकर ऐसे मुद्दों पर चर्चा करनी होगी और अपनी कमियों को दूर करना होगा।

सुभाष जी ने कहा कि हम जिन मुद्दों पर चर्चा करे उसका कोई structure होना चाहिए। ताकि वा लोगों को position लेने में मदद करे। हमारे सामने जो भी समस्या आती है चाहे वो Sexual Harrasment हो या कोई और हमें उस पर Action लेना होगा। इसके लिए हमें लोगों की Capacity Building करनी होगी। किसी भी समस्या के बारे में पूरी जानकारी जुटानी होगी। यह सबकुछ Structure के माध्यम से ही किया जा सकता है, ताकि हम विभिन्न मुद्दों पर एक दूसरे से जुड़े रहे और खुलकर चर्चा कर सके।

हमारे संचार के माध्यम एकतरफा नहीं होने चाहिये ताकि हमारे सोच–विचार का दायरा बड़ा हो। मोहन जी ने कहा कि अगर कुछ लोग इन बातों के खिलाफ है तो वो भी अपनी विरोधी बातें निसंकोच रख सकते हैं।

मंगेश जी ने कहा कि सोशल एक्शन पर ज्यादा प्रगति नही हुई है अर्थात यह समूह ज्यादा सफल नहीं हुआ है जिसमें उन्होंने अपने आपको भी जिम्मेदार ठहराया। अभिजीत जी ने मंगेश की बातों को समझाते हुए कहा कि हमें इस ओर काम करने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि पिछले वर्ष समलैंगिक लोगों ने मिलकर जो आंदोलन किया उसके परिणामस्वरूप अब समलैंगिकता को गैर–कानूनी करार से हटाया जा चुका है जो समलैंगिक समूह के लिए बहुत बड़े निर्णय की बात है।

सुनीता जी ने कहा कि ऐसे आन्दोलनो के लिए अलग–अलग स्थान बनाना मुश्किल है अर्थात एक ऐसी जगह होनी चाहिये जहां हम लोग एक साथ सीख भी सकें और अपना–अपना योगदान भी दे सकें। उन्होंने कहा कि आज भी गरीब, दलित और पिछड़े वर्ग की महिलाओं पर लगातार अत्याचार हो रहा है और उनके साथ कोई भी खड़ा हुआ दिखाई नहीं दे रहा है चाहे वो एन.जी.ओ. हों या सरकार या मीडिया हो। कोई भी मजबूती से महिलाओं का साथ नहीं दे रहा है अर्थात मेन्स टीम में इन सभी समस्याओं को लाने की जरूरत है तभी हम सफल हो पाएंगें। अगर FEM की तरफ से इसकी शुरूआत हो सके तो उसका स्वागत है।

हरीश जी बोले कि फेम की तरफ से एक पोजीशन होनी चाहिये क्योंकि यह स्पष्ट करेगा कि महिला अधिकार के साथ फेम कहां खड़ा है।

पुरूषों का रोल महिलाओं के अपेक्षा सभी घटनाओं पर बहुत कम देखने को मिलता है। समलैंगिक समूह का एक अच्छा खासा ढांचा है और वो हमसे कहीं ज्यादा संस्थागत है।

सुभाष जी ने कहा कि पोजीशन लेने के दो तरीके हैंः पहला समस्याओं पर प्रतिक्रिया देना और दूसरा समस्या को सुलझाना। प्रतिक्रिया देना बहुत आसान है लेकिन सुलझाना बहुत मुश्किल।

मधुमिता ने कहा कि हमने Gender Neutral Law की बात करी ताकि लड़के और लड़कियां दोनों के लिए Sexual abuse की बात उसमें हो और अपराधी के लिए एक जैसा ही दंड भी हो। लेकिन इस तरफ हाई कोर्ट का रूख बच्चों और समलैंगिकों के मानव अधिकार को आपस में भिड़ाना था। उन्होंने कहा कि ढॉचा तैयार करना जरूरी है पर यह बाते किसी निर्णय को रोके नहीं।

सतीश जी ने कहा कि पोजीशन लेने के लिए हमें सोचना पड़ेगा और पोजीशन जिस समय जरूरी है उस समय नही लिया तो उस पोजीशन का कोई मतलब नहीं होगा।

अभिजीत ने कहा कि फेम का ढ़ांचा और फेम की प्रक्रिया पर सहमति बनाने से पहले यह सोचना पड़ेगा कि हम फेम से क्यों जुडना चाहते हैं अर्थात फेम की परिकल्पना से मुझे क्या ताकत मिलेगी? इससे जुड़ने पर मुझे व्यक्तिगत तौर पर क्या फायदा होगा? और असल में मेरा इस प्रक्रिया में क्या योगदान होगा। सभी के अपने–अपने व्यक्तिगत और राजनैतिक कारण रहे हैं फेम से जुड़ने के। उसके बाद फेम के ढांचा और पहचान के लिए कुछ समूह बनाये गये जिनमें निम्न लोगों को शामिल किया गया –

Sl	Action Points	Group members	Responsibility	Time
1	*Reaction/Contribution on the issues/ Debate on Social justice *Supporting other social justice movements i)Dowry Prohibition Act initiated by Jagori ii) Age of consent initiated by HAQ	Anand and Harish Sadani	Harish Sadani	15 Aug
2	Ideological Clarification(Concept note)	Mangesh, Mohan bhai , Meet	Mohan Bhai	30th september
3	Position paper(Position on key issues	Subhash,Anand,Satish,Dr Sanjay	Subhash Medhapurkar	15 July
4	Structure – Identity	Harish, Rajdev, Shah ji, Satish	Harish Sadani	
5	Communication chanel Exchange-experiences/opinion	Meet, Shishir, Suraj		30th September

6	TOR of our relationships Common action/Campaign	Mohan Bhai, Subhash, Bimla	Mohan Bhai	End of Aug

सतीश जी ने कहा कि FEM के लिए फैसलिटेशन सेन्टर भी होना चाहिये जिसे कुछ निर्णय के लिए सर्वसम्मति हो। चर्चा हुई कि फेम आने वाले साल में क्या करेगा, उसकी दिशा क्या होगी, यह सब अलग–अलग राज्यों से आये मित्र फेम के सम्पर्क बिन्दु बन सकते हैं।

सुभाष जी ने बात उठाई की फेम में लोग रूचि रखते हैं। फेम अपनी आवाज उठाना भी चाहता है पर फेम का सारा काम कौन करेगा? फेम को चलाने में जो समय, मेहनत और पैसा लगेगा वह किसकी जिम्मेदारी है? अभिजीत जी ने कहा कि रिश्ते चलाना सबकी जिम्मेदारी है। आनंद जी ने कहा कि क्योंकि फेम का अपना अलग नेटवर्क है और यह मेन इन्गेज इन इण्डिया की तरह नहीं है तो हमें फिर फेम के ही नाम से मुद्दो से जुड़ना होगा और प्रतिनिधित्व करना होगा। इसके लिए निश्चित समय देना होगा।

इस बात पर भी चर्चा हुई कि फेम का मेन इन्गेज से क्या रिश्ता रहेगा? उन कारणों को भी देखा गया जिसमें फेम, मेन इन्गेज से अलग रखा गया है पर यह भी बात हुई कि ग्लोबल फोर्सेज के साथ सम्बन्ध बनाने होगें नही तो हम मीटिंग करते रहेगें और इसका फायदा कुछ नहीं होगा।

अभिजीत जी ने कहा कि अगर अंतर्राष्टीय मुद्दा बनाना है तो उसमें हम लोगों को चुप नहीं बैठना है। विदेशी मित्र हमारे मुद्दे को कैसे समझेगें? वह अपने उपाय सुझायेगें लेकिन क्या यह हमारे लिए काम करेगें? उसे चुनौती देना है और चुनौती देने के लिए हमें उनके साथ बैठना जरूरी है। यह चुनौती ग्लोबल साउथ से आनी चाहिये। अगर हमें उन लोगों की सोच बदलनी है तो हमें उनके साथ बैठकर एक वैकल्पिक सोच और एक वैकल्पिक अनुभव खडा करना पड़ेगा अर्थात हम उनसे रिश्ता रखेगें लेकिन रिश्ते की टर्म और कन्डीशन खुद तय करेगें।

मोहन जी ने कहा कि फेम को लेकर बहुत व्यवहारिक रूप से काम करने की जरूरत है। फेम और मेन इन्गेज का रिश्ता एक दूसरे को प्रभावित और सूचित करने वाला होना चाहिये इसके बारे में भी बातें हुई, क्योंकि दोनों में संबंध होना बहुत जरूरी है।

रिजनल शेयरिंग करना भी बहुत जरूरी है। उसके बारे में हमें क्षेत्रीय, जिला और गांव के स्तर पर सोचना होगा। लोगों से सीधी बात करना है क्योंकि इस पर लोगों की प्रतिक्रिया बहुत जरूरी है।

कुछ सुझाव/निर्णय :

1. FEM जैसे पुरुषों के group की महिलाओं के मुद्दे पर प्रतिक्रिया आनी जरूरी है।
2. जो लोग फोरम से जुड़ते है उनकी अपेक्षाए स्पष्ट होनी चाहिए क्योंकि दोनों की एक–दूसरे से कुछ अपेक्षाए होती है लोग नेटवर्क से कुछ कारणों से जुड़ते है और नेटवर्क में आने के बाद उनसे कुछ उम्मीदें नटवर्क की भी होती है।
3. FEM की बात–चीत का एक औपचारिक Structure होना अर्थात एक Action Group होना चाहिए जिसमें यदि कोई समस्या उभरकर सामने आती है तो FEM से जुड़े सभी लोगों की एक–सी प्रक्रिया होनी चाहि तभी इसे आगे बढाया जा सकता है
4. अभिजीत जी ने कहा कि अगर हम FEM को Minimum Action के रूप में देखना चाहते हैं तो हमें इसमें कुछ निवेश करना होगा और एक गंभीर Position लेना होगा क्योंकि इस समय हमारा परिचय क्षेत्र भी काफी सीमित हैं जिसमें हमें बढ़ाने की जरूरत है। समस्या को लेकर हमारे आदर्श साफ–साफ उल्लेखित होने चाहिए। हमारी Position बिलकुल साफ होनी चाहिए और इन सभी चीजों के लिए हमें समय–समय पर Capacity Building करनी पड़ेगी। उन्होंने यह भी कहा कि इसके लिए हम SANAM की प्रक्रिया से मार्गदर्शन ले सकते है।

5. मोहन जी FEM प्रक्रिया के विषय में कहा कि यह टूटा नहीं बल्कि इसके नेटवर्क में एक लचीलापन रखा ही गया था लोगों को इस बारे में थोड़ा धीरज रखने की जरूरत है। आनंद जी ने सवाल उठाया कि क्या जो भी लोग मीटिंग में उपस्थित है उनका FEM से भावनात्मक जुड़ाव है ? या मुद्दों को लेकर हैं ? क्या हम कोशिश कर रहे है कि इस मुद्दे को लेकर ज्यादा से ज्यादा लोगों को बुलाया जाए ताकि हम वास्तव में एक फोरम तैयार कर सके।
6. FEM के कार्य की जिम्मेदारी आपस में लेने की जरूरत है। अलग–अलग राज्यों से आये मित्र FEM के सम्पर्क बिन्दु बन सकते है।
7. FEM का बाकी अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ संबंध पर निर्णय लेना चाहिए। फेम और मेन इन्गेज का रिश्ता एक दूसरे को प्रभावित और सूचित करने वाला होना चाहिये इसके बारे में भी बातें हुई, क्योंकि दोनों में संबंध होना बहुत जरूरी है।
8. मुद्दों पर प्रतिक्रिया के लिए आन्नद और हरीश का नाम सुझाया गया। विचारधारा की स्पष्टता के लिए मंगेश, मोहन और मीत का नाम सुझाया गया। Position Paper के लिए सुभाष जी, सतीश जी, आनंद जी और डॉ संजय का नाम सुझाया गया। ढांचा और पहचान के लिए हरीश जी, राजदेव जी, शाह जी और सतीश जी का नाम सुझाया गया। सम्पर्क चैनल स्थापित करने के लिए मीत, शिशिर और सूरज का नाम सुझाया गया।

प्रतिभागियों की सूची

क्र0	नाम	राज्य
1	प्रेरणा मलिक	ओडिसा
2	विमला	तमिलनाडु
3	राजदेव चतुर्वेदी	उत्तर प्रदेश
4	सन्तोष कुशवाहा	उ0प्र0
5	जगदीश लाल	उत्तराखण्ड
6	स्वरूप रतन पाल	राजस्थान
7	देवेन्द्र भदौरिया	म0प्र0
8	राकेश कुमार सिंह	बिहार
9	मीत	महाराष्ट्र
10	आनंद	महाराष्ट्र
11	मोहन हीराभाई हीरालाल	महाराष्ट्र
12	हरीश सदानी	महाराष्ट्र
13	डा0 संजय	उ0प्0
14	करन झारे	म0प्र0
15	अशोक तगंडे	महाराष्ट्र
16	महेन्द्र कुमार	म0प्र0
17	शिशिर चन्द्र	उ0प्र0
18	वीरेन्द्र राय	नई दिल्ली
19	मधुमिता	नई दिल्ली
20	दिनेश	गुजरात
21	अतुल बमेची	गुजरात
22	अननिका श्रीवास्तव	नई दिल्ली
23	समीक्षा सिंह	उ0प्र0

24	प्रीती सिंह	उ0प्र0
25	लावण्या मेहरा	नई दिल्ली
26	रविराज	महाराष्ट्र
27	एच0पी0देशमुख	महाराष्ट्र
28	शाहजी	महाराष्ट्र
29	सुभाष मेढ़ापूरकर	महाराष्ट्र
30	लक्ष्मन	नेपाल
31	डा0 शशीकान्त अहंकारी	महाराष्ट्र
32	डा0 मंगेश कुलकर्णी	महाराष्ट्र
33	सुनीता धर	नई दिल्ली
34	डा0 अभिजीत दास	नई दिल्ली
35	डा0 तवन जुनेजा	नई दिल्ली
36	प्रतिभा डिमेलो	नई दिल्ली
37	सतीश कुमार सिंह	नई दिल्ली
38	अजय कुमार	नई दिल्ली
39	अनीता	नई दिल्ली
40	पूनम सिंह	नई दिल्ली
41	तुलसी	नई दिल्ली
42	इशू	नई दिल्ली
43	आलम	नई दिल्ली